चेतना विकास मूल्य शिक्षा

यतीत्व–सतीत्व

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद वांग्मय से एक संकलन

Version 1

22 अक्टूबर 2019

श्रद्धेय श्री ए. नागराज जी द्वारा प्रणेत मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) में से शब्दों के संदर्भों के खोजने के क्रम में यह "यतीत्व और सतीत्व" शब्द के संदर्भों का संकलन है। यदि यहाँ लिखे हुए और मध्यस्थ दर्शन के मूल वाङ्ग्मय में कोई अंतर मिले तो मूल वाङ्ग्मय को ही सही माना जाए। यहाँ लिखे हुए में त्रुटियों के सुधार और इसको और उपयोगी बनाने हेतु भागीदारी करने के लिए रोशनी साहू (sahuroshani@gmail.com) से संपर्क करें।

Version 0.1	Draft version created	Roshani Sahu, 22/10/2019

यतीत्व–सतीत्व

परिभाषा:

- **यतीत्व** – यत्नपूर्वक अध्ययन करना, भ्रम से मुक्ति पाना, सुखी होना अभ्युदय सहज प्रमाण संपन्न रहना।
  – यत्नपूर्वक तरने के लिए निर्भ्रमता सहित की गई प्रक्रिया एवम् प्रयास। **(पृष्ठ नं.– 156)**
- **सतीत्व** – सत्व पूर्वक करने की प्रक्रिया, भ्रम मुक्ति। **(पृष्ठ नं.– 183)**

(परिभाषा संहिता, संस्करण : तृतीय 2012 मुद्रण: 14 जनवरी 2016)

अनुक्रमणिका

स्वास्थ्य और इससे संबन्धित शब्द को लेकर मध्यस्थ दर्शन वांग्मय में आये सन्दर्भों को निम्न क्रम से संकलित किया गया है.

1. मानव व्यवहार दर्शन ३
2. मानव कर्म दर्शन --
3. मानव अभ्यास दर्शन ४
4. मानव अनुभव दर्शन --
5. समाधानात्मक भौतिकवाद --
6. व्यवहारात्मक जनवाद --
7. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद --
8. व्यवहारवादी समाजशास्त्र --
9. आवर्तनशील अर्थशास्त्र --
10. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान ६
11. मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या --
12. जीवन विद्या – एक परिचय --
13. विकल्प एवं अध्ययन बिन्दु ८
14. मानवीय आचरण सूत्र --
15. संवाद – भाग १ --
16. संवाद – भाग २ --

संदर्भ: मानव व्यवहार दर्शन

(संस्करण: 2011, मुद्रण: 2015)

- पुरुष का जीवन यतित्व से सफल है. पुरुष में जागृति को प्रमाणित करना यतित्व है। स्त्री का जीवन सतीत्व से सफल है। स्त्रियों में जागृति का प्रमाणित होना सतीत्व है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 129)**
- 39. पति–पत्नि 40. यतीत्व–सतीत्व

  यतीत्व : यत्न (प्रयोग) पूर्वक तरने के लिए, जागृति निर्भ्रमता और जागृति सहज निरंतरता के लिए किया गया सम्पूर्ण कार्य–व्यवहार; निर्भ्रमता सहित की गई प्रक्रिया एवं प्रयास। यत्न अर्थात् शोधपूर्वक समझना ही तरना।

  सतीत्व : सत्व (संकल्प) पूर्वक तरने, जागृत होने के लिए किया गया कार्य–व्यवहार, समझ, प्रक्रिया समुच्चय; भ्रम मुक्ति। सत्व अर्थात् संकल्प निष्ठापूर्वक समझना ही तरना। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 178)**

संदर्भ: मानव अभ्यास दर्शन

(संस्करण: द्वितीय, मुद्रण: 2018)

- मानवीयता पूर्वक ही पुरूषों में **यतित्व** अर्थात् देव मानव एवं दिव्य मानवीयता की ओर गतिशीलता एवं नारियों में **सतीत्व** उसी अर्थ में स्पष्ट होता है जो आर्थिक एवं सामाजिक संतुलनकारी मूल तत्व है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 103)**

- ''**भोगों में संयमता के लिए पुरूषों में यतित्व एवं स्त्रियों में सतीत्व अनिवार्य है।**'' **यतित्व** का तात्पर्य यत्नपूर्वक तरने से तथा **सतीत्व** का तात्पर्य सत्वपूर्वक तरने से हैं। जागृति की ओर श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक यत्न–प्रयत्नशील होना ही **यतित्व** का लक्षण है। विकास एवं जागृति में निष्ठा एवं विश्वास सम्पन्न होना ही **सतीत्व** का प्रधान लक्षण है। विकास एवं जागृति ही जड़–चैतन्यात्मक प्रकृति का अभीष्ट है। नियति क्रमानुषंगिक ही **यतित्व** एवं **सतीत्व** की अनिवार्यता, उपादेयता, उपयोगिता एवं अपरिहार्यता स्पष्ट होती है। विकास में व्यतिरेक अर्थात प्रतिक्रांति अर्थात ह्रास जो जीवन शक्तियों का अपव्यय होने से होता है जो अज्ञान, अत्याशा, आलस्य, अभिमान, भय, संग्रह, द्वेष और काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य के रूप में प्रत्यक्ष होता है। इसके स्थान पर जागृति के क्रम में मान्यता निर्विरोध, सद्व्यय, ज्ञान, विवेक, संयत आशा, उत्साह, सरलता, अभय, असंग्रह, स्नेह निष्पन्न होता है। फलत: षड् विकार का शमन होता है। परिणामत: जीवन जागृति में निरंतरता होती है। इसी से विकास में श्रद्धा एवं विश्वास दृढ़ होता है। अमानवीय जीवन में गुणात्मक परिवर्तन में विश्वास नहीं हो पाता। गुणात्मक परिवर्तन पूर्वक क्रियापूर्णता एवं आचरणपूर्णता की उपलब्धि जीवन चरितार्थता है। यही श्रेय, नि:श्रेय एवं **यतित्व** तथा **सतीत्व** की उपलब्धि है। प्रत्येक मानव में **यतित्व** एवं **सतीत्व** के प्रति वांछनीय एवं आवश्यकीय निष्ठा का होना ही अभ्युदय का लक्षण है। यह शिक्षा–दीक्षा–संस्कार पूर्वक सफल होता है। यह जागृति की ओर तीव्र निष्ठा का प्रतीक है, जिसका प्रत्यक्ष रूप गुणात्मक परिवर्तन है। मानवीयता के अनन्तर गुणात्मक परिवर्तन देव मानवीयता एवं दिव्य मानवीयता के रूप में प्रकट होता है। मानवीयता में अपव्यता की संभावना नहीं है। यही तथ्य मानवीयता पूर्ण जीवन के अनंतर गुणात्मक परिवर्तन की सुदृढ़ संभावना को स्पष्ट करता है। वैचारिक विकृतियों के बिना अर्थ के अपव्यय की संभावना नहीं है। मूल प्रवृत्तियों का परिष्कार ही चैतन्य क्रिया में गुणात्मक परिवर्तन है। परिष्कृत मूल प्रवृत्ति मानवीयता एवं अतिमानवीयता को प्रकट करती है। यह पूर्णतया संस्कारों पर आधारित प्रक्रिया है। संस्कार संस्कृति का देय है। संस्कृति शुद्धत: मानवीयता सहज रूप में स्पष्ट होती है। अमानवीय जीवन में संस्कृति स्थापित होना संभव नहीं है। अतिमानवीयता पूर्ण जीवन भी मानवीयता पूर्वक ही संस्कृति को अभिव्यक्त करता है। संस्कृति ही सामाजिकता है। मानव संस्कृति **यतित्व** एवं **सतीत्व** का लक्षण है। **सतीत्व** एवं **यतित्व** मानव संस्कृति के लक्षण है। **यतित्व** एवं **सतीत्व** पूर्ण जीवन में तन–मन–धन का अपव्यय का अत्याभाव होता है। सदुपयोगिता ही जीवन का प्रधान कार्यक्रम है। अपव्यय एवं सद्व्यय के मूल में विचार का होना पाया जाता है। मानवीयता की अपेक्षा में सद्व्ययता एवं अपव्ययता का निर्णय होता है। सदुपयोग प्रत्येक मानव सहज अपेक्षा है। मानवीयता में ही यह चरितार्थ होता है। यही मानवीय परम्परा में अक्षुण्णता को स्थापित करता है। मानवीयता पूर्ण परम्परा का पराभव नहीं है। अमानवीयता पराभव से मुक्त नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि **यतित्व** एवं **सतीत्व** के मूल में शुद्धत: तन–मन–

धनात्मक अर्थ के सदुपयोग में निष्ठा एवं विश्वास ही है। यही सत्यता मानवता के वैभव को कीर्तिमान सिद्ध करता है। इसका सर्वसुलभ हो जाना ही अखण्डता है, जिसमें ही भूमि स्वर्ग, मानव देवता, धर्म सफल एवं नित्य मंगल होता है। (अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 139-140)

संदर्भ: मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

(संस्करण: 2008)

- 39.पति/पत्नी – 40. यतीत्व/सतीत्व

परिभाषा : यतीत्व :– यत्न पूर्वक तरने के लिए, जागृति निर्भ्रमता और जागृति सहज निरंतरता के लिए किया गया सम्पूर्ण कार्य–व्यवहार; निर्भ्रमता सहित की गई प्रक्रिया एवं प्रयास। यत्न अर्थात शोधपूर्वक समझना ही तरना।

सतीत्व :– सत्व पूर्वक तरने, जागृत होने के लिए किया गया कार्य–व्यवहार, समझ, प्रक्रिया समुच्चय; भ्रम मुक्ति। सत्व अर्थात संकल्प निष्ठापूर्वक समझना ही तरना।

सत्व :– सह–अस्तित्व पूर्वक अस्तित्व को सिद्ध करना।

विवाह सम्बन्ध को पति–पत्नी सम्बंध के नाम से जाना जाता है। मानव, मानव से पहचान, निर्वाह करता है, जहां सेवा ली जाती है। सभी सम्बन्ध परिवार के ध्रुव है। परिवार में एक से अधिक व्यक्तियों का विश्वास पूर्ण सम्मिलित उत्पादन कार्य करना तथा सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह रूपी व्यवहार करना सुलभ होता है। प्रत्येक सम्बन्ध निश्चित ध्रुव है। जैसे माता–पिता, पुत्र–पुत्री, स्वामी–सेवक, गुरू–शिष्य, भाई–बहिन, मित्र, पति–पत्नी। सम्पूर्ण सम्बन्ध नियति सहज रूप में वर्तमान रहते हैं। इनके प्रति जागृत होना एक अनिवार्य स्थिति है। जागृत और जागृति–पूर्ण कार्य–व्यवहार, विन्यास होना सहज है।

मानव, परम्परा सहज रूप में बहु–आयामी पहचान प्रवृत्ति वर्तमान है। अस्तित्व ही, सह–अस्तित्व होने के फलस्वरूप पदार्थावस्था ने परिणामानुषंगीय विधि से, विविध तत्वों के रूप में, संतुलन को व्यक्त किया है। प्राणावस्था ने, बीजानुषंगीय विधि से, विविध वनस्पतियों के रूप में संतुलन को व्यक्त किया है। जीवावस्था में वंशानुषंगीय विधि से, अनेक प्रकार की जीव परम्परा ने, संतुलन को व्यक्त किया है। मानव के लिए संस्कारानुषंगीय विधि से, समाधान, समृद्धि, अभय और सह–अस्तित्व को प्रमाणित करना सार्थकता है। इसे स्वराज्य व स्वतंत्रता पूर्वक, मानवीय संस्कृति (सम्बंधों की पहचान, स्थापित शिष्ट मूल्य का निर्वाह), मानवीय सभ्यता (मानव मूल्य व जीवन मूल्यों का वर्तमान में प्रमाणीकरण), विधि (मानवीयता पूर्ण आचारण संहिता) की रक्षा, व्यवसाय आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहित (स्वयं व्यवस्था होने में विश्वास और परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था जो – (१) शिक्षा संस्कार (२) न्याय–सुरक्षा (३) उत्पादन कार्य (४) विनियम कोष (५) स्वास्थ्य–संयम व्यवस्था में भागीदारी को प्रमाणित करना, मानव परम्परा की सार्थकता है। मानव, परम्परा के रूप में अखंड है। मानवीयता पूर्ण संस्कार परम्परा में, मानवीय शिक्षा संस्कार सार्वभौम है। मानव परम्परा में स्व–राज्य, स्वतंत्रता सार्वभौम है। मानव परम्परा में न्याय सुरक्षा, श्रम नियोजन व श्रम विनियम रूपी विनियम कार्य, सार्वभौम प्रमाणित होता है। साथ ही मानव जाति में अखंडता मानव धर्म, इसके अनुसंधान का उद्देश्य, प्रामाणिकता और सर्वतोमुखी समाधान, सार्वभौम है। इसलिए मानव, अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था के रूप में सहज है।

परिवार ही व्यवस्था के रूप अखंड है। परिवार में समाधान, समृद्धि, अभय और सह–अस्तित्व प्रमाणित होता है। इसलिए सम्पूर्ण मानव परिवार ही, समाज का स्वरूप है।

प्रत्येक सम्बन्ध का ध्रुव, परिवार रचना का आधार है। परिवार रचना, सम्बन्धों को पहचानना, मूल्यों का निर्वाह करने के रूप में है। सम्बन्ध मानव तथा नैसर्गिक भेद से पाया जाता है। एक से अधिक मनुष्यों का होना ही सम्बन्धों का होना, वर्तमान ही होता है। इस प्रकार, वर्तमान में जो कुछ भी है, जितना भी है, वह सब परस्परता में सम्बन्धित है। इनमें जागृत होना ही मानव का अधिकार है।

मानव ही जागृत व जागृति पूर्ण होता है, हो सकता है, होने के लिये इच्छुक है। इस कारण पहचानना निर्वाह करना और जानना–मानना सहज है। इसी क्रम में पति–पत्नी सम्बन्ध भी सहज है। इस सम्बन्ध में शरीर, (अथवा तन) सम्बन्ध, अन्य सम्बन्धों से भिन्नता का आधार है। शरीर सम्बन्ध मानव संतानार्थ सार्थक है। यही व्यसन के रूप में अथवा कामोन्माद के रूप में परिवार के असंतुलन तथा अव्यवस्था के रूप में परिणित होता है।

परिवार मूलक विधि से ही, स्वराज्य व्यवस्था नैसर्गिक है। व्यवस्था प्रत्येक मनुष्य का अभीष्ट है। इस प्रकार मानव परिवार के ध्रुव के रूप में पति–पत्नी का सम्बन्ध, पहचान व निर्वाह सहज है।

पति–पत्नी का मानस, परिवार के आकार में, सुदृढ़ होना ही एक मन, दो शरीर का तात्पर्य है। साथ ही जीवन जागृति का संकल्प होना, एक मन दो शरीर का तात्पर्य है। जीवन जागृति प्रत्येक मनुष्य की अभीप्सा है। जीवन जागृति, जीवन–विद्या (ज्ञान) बोध होने के उपरान्त है। यह जीवन क्रिया कलापों के अंतर्सम्बन्ध को, परस्पर जीवन प्रभाव क्षेत्र अनुबन्ध क्रम से स्पष्ट करता है। निरीक्षण, परीक्षण विधिपूर्वक अभ्यास से, द्रष्टा पद प्रतिष्ठा सहज ही प्रमाणित होता है। द्रष्टा पद प्रतिष्ठा को प्रमाणित करना ही यतीत्व व सतीत्व का तात्पर्य है। एक पत्नी व्रत, एक पतिव्रत भी, यतीत्व और सतीत्व का प्रमाण है। इस प्रकार स्वानुशासन के रूप में द्रष्टा पद का, जीवन–जागृति का प्रमाण, मानव सहज है।

इस धरती में ही चारों अवस्थाओं का वैभव वर्तमान है। इस धरती पर मानव संतान संख्या का नियंत्रण होना, पति–पत्नी का एकत्र निश्चय मानसिकता होना, मानव अखंड समाज के रूप में स्पष्ट होना, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सार्थक होना आवश्यक है। ये सब एक दूसरे के पूरक हैं। इस प्रकार दाम्पत्य में, उभय मानसिकता–निर्णयों में, एक रूप होने से सहज ही, सर्वशुभ समीचीन होता है। इसका आधार मानवीयता है। जिसका प्रमाण स्वयं के प्रति विश्वास और श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने योग्य होना है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 100–103)**

संदर्भ: विकल्प एवं अध्ययन बिन्दु

(संस्करण:2011, मुद्रण:2016)

- (23) संबंधों में निहित आशय मूल्यों का निर्वाह
  - o सात संबंध क्रिया
  - o माता–पिता पोषण–संरक्षण
  - o भाई–बहन परस्पर अभ्युदय संयोग (सहयोग)
  - o मित्र–मित्र परस्पर पूरक
  - o गुरु–शिष्य प्रामाणिक–जिज्ञासु
  - o साथी–सहयोगी दायित्व–कर्तव्य
  - o पुत्र–पुत्री अभ्युदय, उपयोगिता, पूरकता
  - o **पति–पत्नी** **यतीत्व, सतीत्व**
  - o व्यवस्था भागीदारी

  (अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 21)